IJNRD.ORG ISSN : 2456-4184
INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD) | IJNRD.ORG
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

''जनपद अमरोहा में गन्ने की कृषि में संलग्न मानव संसाधन'' एक प्रतिदर्शात्मक अध्ययन

डॉ रमेश चन्द्र

एसोसिएट प्रोफेसर, भूगोल विभाग

जे.एस.हिन्दू पी.जी. कालिज, अमरोहा

एम.जे.पी. रूहेलखण्ड वि.वि. बरेली से सम्बद्ध

मोबाईल नं0 : 9720583746

Email Id : dr.rameshchandra2@gmail.com

सारांश :– प्रस्तुत शोध अध्ययन जनपद अमरोहा के अमरोहा, जोया, धनौरा, गजरौला, हसनपुर तथा गंगेश्वरी विकासखण्डों की 30 ग्राम पंचायतों के 600 गन्ना किसानों से प्रतिदर्श विधि से आंकड़े एकत्रित कर उनके सामाजिक स्तर का अध्ययन किया गया है। प्रत्येक विकासखण्ड से 5 ग्राम पंचायतों को चुना गया है तथा पत्येक ग्राम पंचायत से 20 गन्ना कृषकों को चुनकर उनसे व्यक्तिगत साक्षात्कार द्वारा आंकड़े एकत्रित किये गये हैं। अध्ययन में गन्ने की कृषि में संलग्न मानव संसाधन की शिक्षा, आयु वर्ग, जाति, परिवार के प्रकार व आकार, भूमि जोत का आकार, वार्षिक आय, आवास प्रतिरूप, परिवहन के साधन, संचार व मीडिया उपकरण, कृषि उपकरण व घरेलू उपकरण को आधार बनाया गया है। इसके अतिरिक्त कृषि तथा गन्ने की कृषि के बारे में अध्ययन किया गया है।

मुख्य बिन्दु :– कृषि, गन्ना व मानव संसाधन, शोध एवं व्याख्या ।

प्रस्तावना :– मानव स्वयं एक संसाधन है जो कि बस्तुओं एवं तत्वों में उपयोगिता का गुण उत्पन्न करके अन्य बस्तुओं व तत्वों को संसाधन बनाता है। मानव अपने ज्ञान व बुद्धि के बल पर अनेक कार्य करता है, जिनमें कृषि कार्य भी सम्मिलित है। कृषि मानव की अति प्राचीन प्राथमिक आर्थिक क्रिया है। इसमें भूमि को जोतकर उससे फसल उत्पादन किया जाता है। सामान्यतः कृषि कार्य के लिए काश्तकारी या खेती बाड़ी शब्द का भी व्यवहार होता है। कृषि शब्द का अर्थ है '' भूमि की जुताई करके फसल उत्पादित करना '' हिन्दी भाषा का कृषि शब्द संस्कृत भाषा की कर्ष धातु से बना है जिसका अर्थ है 'कर्षण' या 'खींचना' अथवा 'जोतना'। 1951 में **ई0डब्ल्यू0 जिमरमैन** ने बताया कि '' कृषि खेत की जुताई या फसल उगाने से कहीं अधिक है। यह पशुपालन, वृक्ष खेती, वनोद्यम, सिंचाई, मत्स्य–बीज, समूर फार्मिंग, अन्य कीटों का पालन आदि को सम्मिलित करता है। '' कृषि वैज्ञानिकों ने कृषि के अन्तर्गत फसल उत्पादन तथा पशुपालन दोनों को शामिल किया है। इनके अनुसार ''खेती कार्य का विज्ञान एवं अभ्यास है।'' इस प्रकार कृषि क्रिया में फसल उगाना व पशुपालन दोनों क्रियायें शामिल की जाती हैं। [1]

गन्ने की एतिहासिक पृष्ठभूमि :– गन्ने का प्राचीन नाम सैकेरम ऑफिसिनेरम है। इसका नाम गन्ना क्यों पड़ा, इसके बारे में बेबिलोन के इतिहास में जिक्र मिलता है कि ईसा से 800 वर्ष पूर्व **गायना नामक आदिवासी** ही इसकी खेती किया करते थे और उन्हीं के नाम पर इसका नाम **गन्ना** पड़ा। इसका भारतीय नाम **ईख** हैं। [2] गन्ने की खेती 8000 साल पहले दक्षिण प्रशान्त क्षेत्र में न्यू गिनी के द्वीप पर हुई थी और इसके बाद धीरे–धीरे सोलोमन द्वीप समूह में इसकी खेती होने लगी । इसके 2000 साल बाद गन्ना इण्डोनेशिया, फिलीपीन्स और उत्तर भारत तक पहुँच गया। चीन में गन्ने की खेती बढ़ रही थी। इसके बाद गन्ने की खेती पेरू, ब्राजील, कम्बोडिया और वेनेजुएला में भी होने लगी। [3]

गन्ना बांस जैसी वनस्पाति का वंशज है और उसी तरह इसकी गॉठदार पारियॉ होती हैं। गन्ना उष्ण कटिबन्धीय तथा उपोष्ण कटिबन्धीय जलवायु वाले देशों में उत्पादित किया जाता है। देश की व्यापारिक फसलों में गन्ना प्रथम स्थान रखता है, क्योंकि समस्त व्यापारिक फसलों में गन्ने का सबसे अधिक मूल्य का उत्पादन होता है। गन्ना उत्पादन क्षेत्र की दृष्टि से भारत का विश्व में प्रथम स्थान है। यहॉ विश्व के गन्ना क्षेत्र का लगभग 37 प्रतिशत क्षेत्र पाया जाता है। भारत विश्व का 50 प्रतिशत गन्ने का उत्पादन करता है। भारत में गन्ने से गुड़, खांडसारी व चीनी तैयार की जाती है। इसकी खोई से कागज तथा शीरे से अल्कोहल तैयार किया जाता है। इसका अगौला पशुओं के चारे के रूप में तथा सूखी पत्ती छप्पर आदि बनाने के काम आती है। [4] विश्व में महत्वपूर्ण गन्ना उत्पादक देश भारत, क्यूबा, ब्राजील, मैक्सिको, पाकिस्तान, चीन, फिलीपीन्स एवं थाईलैण्ड हैं। इनके अतिरिक्त हवाई द्वीप, संयुक्त अरब गणराज्य, इण्डोनेशिया, जापान आदि देशों में भी गन्ने का उत्पादन किया जाता है। विश्व में लगभग 31 लाख हैक्टेयर भूमि पर गन्ना उगाया जाता है। गन्ने का कुल उत्पादन 156.45 मिलियन अर्थात् 15 करोड़ 64 लाख 50 हजार टन है। वर्ष 1998 में संसार में 176 लाख हैक्टेयर गन्ना क्षेत्र में 64600 किग्रा. प्रति हैक्टेयर औसत उपज की दर से 125 करोड़ टन गन्ने का उत्पादन किया गया। संसार के कुल गन्ना उत्पादक देशों का 1998 के कुल विश्व गन्ना उत्पादन में भाग इस प्रकार रहा – ब्राजील 27.1 प्रतिशत, भारत 21.2 प्रतिशत, चीन 6.9 प्रतिशत, पाकिस्तान 4.3 प्रतिशत, मैक्सिको 3.9 प्रतिशत, थाईलैण्ड 3.9 प्रतिशत, आस्ट्रेलिया 3.3 प्रतिशत, क्यूबा 2.8 प्रतिशत, सं0रा0अ0 2.5 प्रतिशत, इण्डोनेशिया 2.2 प्रतिशत और फिलीपीन्स 2.2 प्रतिशत । [5]

गन्ना व्यावसायिक फसलों में से एक व्यावसायिक फसल है। इसकी खेती के लिए गर्म और आर्द्र दोनों प्रकार की जलवायु की आवश्यकता होती है। इसका पौधा लगभग 1 साल में तैयार होता है। गन्ने की बुबाई के समय 25^0 से0, इसके बढ़ने के लिए 35^0 – 35^0 से0 तापमान की आवश्यकता होती है। 40^0 से अधिक तथा 15^0 से कम तापमान में गन्ने की पैदावार नहीं होती है। गन्ने के लिए 100 से 150 सेमी. वर्षा और गहरी दोमट नमी से पूर्ण चिकनी मिट्टी की आवश्यकता होती है। इसकी खेती के लिए सस्ते श्रम की आवश्यकता होती है।

अध्ययन के उद्देश्य :– प्रस्तुत शोध द्वारा अध्ययन क्षेत्र में गन्ने की खेती तथा गन्ना कृषकों के जीवन स्तर के सम्बन्ध में विभिन्न आयामों के अन्तर्गत अध्ययन करना है।

शोध विधि तन्त्र :– प्रस्तुत शोध अध्ययन में जनपद अमरोहा के ग्रामीण क्षेत्र का अध्ययन किया गया है जिसके लिए जनपद के प्रत्येक विकासखण्ड से 5 ग्राम पंचायतों को चुना गया है अर्थात् 6 विकासखण्डों से 30 ग्राम पंचायतों को चुना गया है और प्रत्येक ग्राम पंचायत से 20 गन्ना कृषकों को चुनकर उनसे व्यक्तिगत साक्षात्कार द्वारा आंकड़े एकत्रित किये गये है। कृषकों से प्राप्त आंकड़ों को गन्ना कृषकों की शिक्षा, कृषि का स्तर, रहन सहन का स्तर, आय, जाति, आयु वर्ग, परिवार के प्रकार व आकार एवं आवास प्रतिरूप आदि के आधार पर सारिणीबद्ध करके आंकड़ों का विश्लेषण किया गया है। प्राथमिक आंकड़ों के अतिरिक्त आवश्यकतानुसार विभिन्न माध्यमों से द्वितीयक आंकड़े प्राप्त करके उनका यथा स्थान प्रयोग किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र :– अध्ययन क्षेत्र जनपद अमरोहा के निर्माण की घोषणा 15 अप्रैल 1997 को मुरादाबाद जनपद की 3 तहसीलों को सम्मिलित करते हुये की गयी थी। नौगावां सादात को तहसील का दर्जा मिलने के बाद अब जनपद में 4 तहसीलें हो गयी हैं। जनपद अमरोहा उत्तर प्रदेश राज्य के पश्चिम में स्थित है तथा मुरादाबाद मण्डल का एक जनपद है जो कि जनपद मुरादाबाद के पश्चिम में स्थित है। इसके पश्चिम में गंगा नदी इसकी सीमा का निर्धारण करती है, गंगा नदी के पार जनपद मेरठ, हापुड़ तथा बुलन्दशहर अध्ययन क्षेत्र की पश्चिमी सीमा पर स्थित हैं। उत्तर में जनपद बिजनौर तथा

दक्षिण में जनपद सम्भल व बदायूँ स्थित है। जनपद का भौगोलिक विस्तार 28^0 53′ उत्तर से 29^0 14′ उत्तरी अक्षांश तक तथा देशान्तरीय विस्तार 77^0 58′ से 78^0 40′ पूर्वी देशान्तरों के मध्य स्थित है। प्रशासनिक दृष्टि से जनपद को 4 तहसीलों व 6 विकासखण्डों में विभाजित किया गया है। यहॉ का सम्पूर्ण क्षेत्र मैदानी है जिसमें कई छोटी बड़ी नदियां प्रवाहित होती हैं। यहॉ की मिटटी दोमट, बलुई एवं रेतीली है। अध्ययन क्षेत्र की समुद्र तल से औसत ऊँचाई 200 मीटर है तथा भूमि का ढाल उत्तर से दक्षिण की ओर है। इसी कारण जनपद अमरोहा के उत्तर– दक्षिण में स्थित अमरोहा तहसील समुद्र तल से 210 मीटर तथा दक्षिण में हसनपुर तहसील 185 मीटर की ऊँचाई पर है। जनपद अमरोहा की जलवायु मानसूनी है। हिमालय के तराई क्षेत्र के निकट होने के कारण सामान्यतः जनपद में जलवायु ग्रीष्म ऋतु मे अधिक गर्म तथा शीत ऋतु में अधिक ठण्डी व शुष्क रहती है। [6]

अध्ययन क्षेत्र की अवस्थिति एवं विस्तार

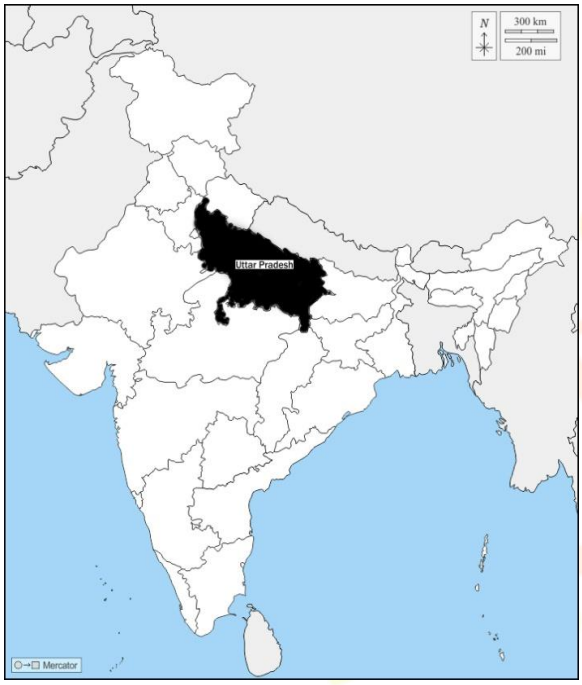

हमारे देश भारत की भॉति उत्तर प्रदेश राज्य भी कृषि प्रधान है जहॉ अन्य खाद्य फसलों के साथ साथ गन्ने की कृषि भी प्रमुखता से की जाती है। गन्ना उत्पादन में उत्तर प्रदेश का देश में प्रथम स्थान है। यहॉ पूरे देश का 47.4 प्रतिशत गन्ने का क्षेत्र है तथा यहॉ सम्पूर्ण देश के गन्ना उत्पादन का 38.24 प्रतिशत गन्ना उत्पादित किया जाता है। भारत में गन्ना उत्पादक राज्य हैं – उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, कर्नाटक, तमिलनाडु, आन्ध्र प्रदेश, गुजरात, पंजाब, हरियाणा, बिहार, पश्चिम बंगाल, राजस्थान, उड़ीसा तथा मध्य प्रदेश। उत्तर प्रदेश में गन्ने के अन्तर्गत 1990–91 में 16.35 तथा 2009–10 में 19.77 लाख हैक्टेयर क्षेत्र था। उत्पादन 1990–91 में 930.54 एवं 2009–10 में 111.70 लाख टन था। **हावर्ड** ने उत्तर प्रदेश के गन्ना क्षेत्रों को तीन भागों में विभाजित किया है। पहला– सहारनपुर से मेरठ तक, दूसरा – बरेली के आस पास का क्षेत्र तथा तीसरा : फैजाबाद –गोरखपुर । अध्ययन क्षेत्र जनपद अमरोहा हावर्ड के दूसरे भाग के अन्तर्गत आता है।

अध्ययन क्षेत्र जनपद अमरोहा में वर्ष 1996–97 मे 2432970, 1998–99 में 4157057, 2000–01 में 3950892, 2004–05 में 4545733, 2010–11 में 4629114 तथा 2012–13 में 4880021 मीटरी टन गन्ने का उत्पादन हुआ था। विवरण से स्पष्ट है कि क्षेत्र में निरन्तर गन्ने के उत्पादन में वृद्धि हो रही है। गन्ना एक व्यावसायिक तथा नगदी फसल है, जिसमें हानि की कम ही सम्भावना रहती है जिसके कारण गन्ने की कृषि में लगा मानव संसाधन या जनसंख्या या गन्ना किसान अपने आप को सुरक्षित महसूस करता है तथा उनके जीवन स्तर में प्रगति देखने को मिलती है। अध्ययन क्षेत्र में दो चीनी मिलें चालू हालत में तथा एक चीनी मिल बन्द है। इसके अतिरिक्त अध्ययन क्षेत्र की सीमा के अति निकट चार चीनी मिलें स्थित हैं। प्रस्तुत शोध अध्ययन में अध्ययन क्षेत्र के गन्ना कृषकों के सम्बन्ध में विभिन्न आयामों पर व्यक्तिगत साक्षात्कार द्वारा अध्ययन किया गया है।

शिक्षा :– शिक्षा मानव के जीवन को सुखी एवं संस्कारवान बनाती है। शिक्षित व्यक्ति प्रत्येक कार्य को सही ढंग से करता है। उसका कार्य करने का तरीका अलग ही होता है। निम्न सारिणी द्वारा अध्ययन क्षेत्र के गन्ना किसानों के शिक्षा से सम्बन्धित आंकड़ों को प्रदर्शित किया गया है –

सरिणी सं0 1

जनपद अमरोहा में गन्ना कृषकों का शिक्षा एवं साक्षरता के आधार पर वर्गीकरण कृषकों की कुल संख्या –600

क्रम सं.	वर्ग	साक्षरता		योग	शिक्षा का स्तर						
		साक्षर	निरक्षर		प्राथमिक	जू.हा. स्कूल	हा. स्कूल	इण्टर मीडिएट	स्नातक	परा स्नातक	योग
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
1	कृषक सं0	393	207	600	30	78	186	144	132	30	600
2	प्रतिशत	65.5	34.5	100	05	13	31	24	22	05	100

स्रोत :– व्यक्तिगत साक्षात्कारद से प्राप्त आंकड़ों के आधार पर

उपर्युक्त सारिणी के अध्ययन से स्पष्ट है कि जनपद में 65.5 प्रतिशत साक्षर तथा 34.5 प्रतिशत निरक्षर कृषक हैं। इसके अतिरिक्त गन्ना किसानों ने सबसे अधिक 31 प्रतिशत हाई स्कूल, 24 प्रतिशत इण्टरमीडिएट, 22 प्रतिशत स्नातक तथा 5 प्रतिशत परास्नातक एवं 5 प्रतिशत प्राथमिक शिक्षा प्राप्त कर रखी है। सारिणी के अध्ययन से निष्कर्ष निकलता है कि अध्ययन क्षेत्र में सबसे अधिक साक्षर हैं तथा हाई स्कूल पास कृषकों की संख्या भी सर्वाधिक है, साथ ही इण्टरमीडिएट तथा स्नातक कृषकों का प्रतिशत भी अच्छा है।

आयु तथा जातिगत संरचना :– भारतवर्ष में मानव के जीवन को चार कालों या अवस्थाओं में विभाजित किया गया है। बाल्यावस्था, युवावस्था, प्रौढ़ावस्था तथा वृद्धावस्था। भारत में अधिकतर युवा वर्ग से सम्बन्धित जनसंख्या निवास करती है। इसीलिए भारत को युवाओं का देश कहा जाता है। इसके साथ ही हमारे देश में वर्ण व्यवस्था भी प्रभावी है और वर्ण व्यवस्था के अन्तर्गत मानव को जातियों और उपजातियों में विभाजित किया गया है। भारत में वर्ण व्यवस्था के अन्तर्गत चार वर्ण – ब्राहमण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र में विभाजित किया गया है तथा इन चारों वर्णों को तीन वर्गों – सामान्य वर्ग, अन्य पिछड़ा वर्ग तथा अनुसूचित जाति/जनजाति में विभाजित किया गया है। निम्न सारिणी में अध्ययन क्षेत्र के गन्ना कृषकों को आयु वर्ग तथा जाति के आधार पर प्रदर्शित किया गया है –

सारिणी सं0 : 2

जनपद अमरोहा में आयु तथा जाति के आधार पर गन्ना किसानों का वर्गीकरण कृषकों की कुल संख्या – 600

क्रम सं0	वर्ग	आयु के आधार पर			योग	जाति के आधार पर			योग
		युवा वर्ग	प्रौढ़ वर्ग	वृद्ध वर्ग		सामान्य	अ.पि. वर्ग	अ.जा.	
		(18–37)	(38–59)	(60 से अधिक)					
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1	कृषको की सं0	150	354	96	600	414	102	84	600
2	प्रतिशत	25	59	16	100	69	17	14	100
कुल					600				600

स्रोत :– व्यक्तिगत साक्षात्कार से प्राप्त आंकड़ो के आधार पर

उपर्युक्त सारिणी के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि अध्ययन क्षेत्र में चयनित गन्ना कृषकों में 59 प्रतिशत प्रौढ़ वर्ग के हैं, 25 प्रतिशत युवा वर्ग के तथा 16 प्रतिशत कृषक वृद्ध वर्ग से हैं। कृषकों की औसत आयु 48.5 वर्ष है। इसके अतिरिक्त 69 प्रतिशत गन्ना कृषक सामान्य वर्ग के, 17 प्रतिशत अन्य पिछड़ा वर्ग के तथा 14 प्रतिशत अनुसूचित जाति से सम्बन्धित हैं। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि अध्ययन क्षेत्र में 84 प्रतिशत कृषक युवा तथा प्रौढ़ वर्ग से सम्बन्धित हैं तथा 86 प्रतिशत कृषक सामान्य तथा अन्य पिछड़ा वर्ग से सम्बन्धित हैं। स्पष्ट है कि अनुसूचित जाति के व्यक्तियों के पास खेती की जमीन नाम मात्र को है। इसके अतिरिक्त युवा तथा प्रौढ़ कृषकों की बहुलता के परिणाम स्वरूप गन्ना कृषि का भविष्य उज्जवल है।

परिवार का प्रकार तथा आकार :– भारत सहित अध्ययन क्षेत्र में प्राचीन काल से ही संयुक्त परिवार प्रथा प्रचलित रही है। वर्तमान समय व परिवेष में शिक्षा के क्षेत्र मे प्रगति तथा घर से बाहर जाकर व्यापार व नौकरी आदि करने के चलन ने एकल परिवारों में वृद्धि देखने को मिल रही है। इसके अलावा हमारे समाज में पहले से ही बड़े परिवार रहे हैं। सरकार परिवार नियोजन की नीतियों के कारण अब छोटे परिवार भी अस्तित्व में आ गये हैं। कहा जाता है कि छोटा परिवार, सुखी परिवार । परिवार के प्रकार तथा परिवार के आकार से सम्बन्धित आंकड़ों को निम्न सारिणी द्वारा प्रदर्शित किया गया है

सारिणी सं0 :– 3

जनपद अमरोहा में परिवार के प्रकार व आकार के आधार पर गन्ना कृषको का वर्गीकरण कृषकों की कुल संख्या – 600

क्रम सं0	वर्ग	परिवार का प्रकार		योग	परिवार के आकार (सदस्यों की संख्या पर आधाति)			योग
		एकल	संयुक्त		छोटा परिवार (4 से कम)	मध्यम परिवार (5 से 11`)	बड़ा परिवार (11 से अधिक)	
1	2	3	4	5	6	7	8	9
1	कृषकों की सं.	342	258	600	156	396	48	600
2	प्रतिशत	57	43	100	26	66	08	100
कुल				600				600

स्रोत :– व्यक्तिगत साक्षात्कार से प्राप्त आंकड़ों के आधार पर

उपर्युक्त सारिणी से स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र में चयनित गन्ना किसानों में 57 प्रतिशत एकल परिवार तथा 43 प्रतिशत संयुक्त परिवार हैं।इसके अतिरिक्त यदि परिवारों के आकार पर दृष्टि डालें तो 26 प्रतिशत छोटे परिवार, 66 प्रतिशत मध्यम परिवार तथा 8 प्रतिशत बड़े परिवार हैं। सारिणी के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि क्षेत्र में एकल परिवारों में बेतहासा वृद्धि हुई है और संयुक्त परिवार प्रथा को धक्का लगा है। एकल परिवारों को जहॉ एक ओर अनेक व्यक्तिगत सुविधाएं प्राप्त होती हैं वहीं दूसरी ओर उन्हें अनेकों कठिनाईयों का सामना करना भी पड़ता है। क्षेत्र में छोटे परिवारों का प्रतिशत केवल 26 है जो कि बहुत कम है, सरकार को चाहिए कि वह परिवार नियोजन कार्यक्रमों को बढ़ावा दें।

भूमि जोत का आकार :– भूमि जोत का आकार किसानों के कृषक स्तर का द्योतक है। जिस किसान के पास जितनी अधिक भूमि होगी, उसके आधार पर ही किसान बड़ा अथवा छोटा होता हैं। भूमि जोत के आधार पर चयनित किसानों के विवरण को निम्न सारिणी के द्वारा प्रदर्शित किया गया है –

सारिणी सं0 :– 4

जनपद अमरोहा में भूमि जोत के आधार पर गन्ना किसानों का वर्गीकरण कृषकों की कुी संख्या –600

क्रम सं0	वर्ग	भूमि जोत – (हैक्टेयर में)				योग
		सीमान्त कृषक (1 से कम)	लघु कृषक (1– 2)	मध्यम कृषक (2–4)	बड़े कृषक (4 से अधिक)	
1	2	3	4	5	6	7
1	कृषक सं.	60	138	228	174	600
2	प्रतिशत	10	23	38	29	100
कुल						600

स्रोत :– व्यक्तिगत साक्षात्कार से प्राप्त आंकड़ों के आधार पर

उपर्युक्त सारिणी के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि चयनित गन्ना किसानों में सर्वाधिक मध्यम कृषक 38 प्रतिशत, बड़े कृषक 29 प्रतिशत लघु कृषक 23 प्रतिशत तथा सबसे कम सीमान्त कृषक 10 प्रतिशत हैं। औसत जोत का आकार 1.05 हैक्टेयर है। निम्नतम जोत का आकार 0.30 एवं अधिकतम जोत का आकार 5.0 हैक्टेयर है। उक्त सारिणी के अध्ययन के उपरान्त निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि अध्ययन क्षेत्र में मध्यम जोत वाले कृषक सर्वाधिक हैं तथा उससे कम बड़े कृषक एवं उससे कम लघु कृषक तथा सबसे कम सीमान्त कृषक हैं। इस प्रकार स्पष्ट है कि क्षेत्र में मध्यम व बड़े कृषकों की अधिकता है।

वार्षिक आय तथा आवास प्रतिरूप :– आय का स्तर तथा आवास का प्रकार नागरिकों के सामाजिक स्थिति या सामाजिक दर्जा का द्योतक होते हैं। आय के स्तरों को तीन वर्गों – निम्न, मध्यम तथा उच्च आय वर्गों में रखा गया है और इसी प्रकार आवासों की भी तीन श्रेणियॉ – कच्चा, पक्का तथा मिश्रित बनायी गयी हैं। पक्के मकानों की भी अलग अलग श्रेणियॉ हैं। अध्ययन क्षेत्र में चयनित गन्ना कृषकों के आय वर्ग तथा आवास के प्रतिरूपों को निम्न सारिणी के माध्यम से प्रदर्शित किया गया है –

सारिणी सं0 : 5

जनपद अमरोहा में वार्षिक आय व आवास प्रतिरूप के आधार पर गन्ना कृषकों का वर्गीकरण कृषकों की कुल संख्या – 600

क्रम सं0	वर्ग	वार्षिक आय (रूपये में)			योग	आवास प्रतिरूप			योग
		निम्न आय(45000 से कम)	मध्यम आय (45000 से 172000)	उच्च आय वर्ग (172000 से अधिक)		कच्चा आवास	पक्का आवास	मिश्रित आवास	
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1	कृषकों की सं0	12	234	354	600	36	486	78	600
2	प्रति शत	02	39	59	100	06	81	13	100
कुल					600				600

स्रोत : व्यक्तिगत साक्षात्कार से प्राप्त आंकड़ों के आधार पर

उपर्युक्त सारिणी के अवलोकन से स्पष्ट है कि चयनित कृषकों में सबसे अधिक 59 प्रतिशत उच्च आय वर्ग के, 39 प्रतिशत मध्यम आय वर्ग के तथा सबसे कम 02 प्रतिशत निम्न आय वर्ग के किसान हैं। इसके अतिरिक्त 78 प्रतिशत किसानों के पास पक्के मकान, 13 प्रतिशत किसानों के पास मिश्रित मकान तथा केवल 06 प्रतिशत किसानों के पास कच्चे मकान हैं। उक्त सारिणी के अध्ययन के उपरान्त निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि केवल 08 प्रतिशत किसानों के अतिरिक्त शेष 92 प्रतिशत किसानों की सामाजिक व आर्थिक स्थिति उत्तम है।

परिवहन व संचार मीडिया :– परिवहन के साधन तथा संचार मीडिया के किन साधनों का प्रयोग मानव संसाधन द्वारा किया जा रहा है, यह इस बात को स्पष्ट करता है कि मानव संसाधन का सामाजिक स्तर निम्न, मध्यम अथवा उच्च है। अध्ययन क्षेत्र में चयनित किसानों द्वारा परिवहन व संचार मीडिया किन साधनों का प्रयोग किया जा रहा है, को निम्न सारिणी के द्वारा प्रदशित किया गया है –

सारिणी सं0 : 6

जनपद अमरोहा में परिवहन के साधन व संचार मीडिया के आधार पर गन्ना किसानों का वर्गीकरण कृषकों की कुल संख्या – 600

क्रम सं0	परिवहन के साधन	कृषक संख्या	प्रतिशत	संचार मीडिया उपकरण	कृषक संख्या	प्रतिशत
1	2	3	4	5	6	7
1	बैलगाड़ी	96	16	लैपटॉप	84	14
2	कार	114	19	डेस्कटॉप	66	11
3	ट्रैक्टर ट्राली	214	40	रेडियो	114	19
4	साईकिल	456	76	टी0 वी0	576	96
5	मोटर साईकिल	582	97	मोबाईल फोन	594	99
6	–	–	–	न्यूज पेपर	156	26
7	–	–	–	इंटरनेट	540	90

स्रोत : व्यक्तिगत साक्षात्कार से प्राप्त आंकड़ों के आधार पर

उपर्युक्त सारिणी के अध्ययन से ज्ञात होता है कि चयनित किसानों में बैलगाड़ी 16 प्रतिशत, कार 19 प्रतिशत, ट्रैक्टर ट्राली 40 प्रतिशत, साईकिल 76 प्रतिशत तथा मोटरसाईकिल 97 प्रतिशत किसानों के द्वारा प्रयोग किया जा रहे हैं। इसके अलावा लैपटॉप 14 प्रतिशत, डेस्कटॉप 11 प्रतिशत, रेडियो 19 प्रतिशत, टी0वी0 96 प्रतिशत, मोबाईल 99 प्रतिशत, न्यूजपेपर 26 प्रतिशत तथा इंटरनेट 90 प्रतिशत किसानों के द्वारा प्रयोग में लाया जा रहा है। इससे स्पष्ट है कि गन्ना किसानों की सामाजिक स्थित उन्नत दशा में है।

कृषि तथा घरेलू उपकरण :– कृषक कृषि में किस प्रकार के उपकरण उपयोग में ला रहे हैं, यह तथ्य किसानों के कृषि कार्य की दशा को निर्धारित करता है तथा किसानों के घरों में उनके दैनिक उपयोग के कौन से उपकरण हैं, यह तथ्य भी किसानों के जीवन स्तर को प्रदर्शित करता है। अध्ययन क्षेत्र में चयनित किसानों द्वारा कृषि में कौन कौन से उपकरण प्रयोग में लाये जा रहे हैं तथा उनके घरों दैनिक उपयोग की कौन कौन सी बस्तुएं उपलब्ध हैं, को निम्न सारिणी के द्वारा प्रदर्शित किया गया है –

सारिणी सं0 : 7

जनपद अमरोहा में कृषि उपकरण व घरेलू उपकरण के आधार पर गन्ना किसानों का वर्गीकरण कृषकों की कुल संख्या –600

क्रम संख्या	कृषि उपकरण	कृषक संख्या	प्रतिशत	घरेलू उपकरण	कृषक संख्या	प्रतिशत
1	2	3	4	5	6	7
1	कल्टीवेटर	366	61	गैस स्टोव	588	98
2	थ्रेसर	132	22	डवल बैड	366	61
3	देशी हल	174	29	प्रेशर कुकर	600	100
4	पाटा	216	36	विद्युत प्रैस	300	50
5	कुदाल/फावड़ा	594	99	दीवार घड़ी	600	100
6	रोटावेटर	180	30	कलाई घड़ी	600	100
7	खुर्पी	600	100	कुर्सी	582	97
8	दरांती	594	99	हीटर	96	16
9	बैल	264	44	पंखे	600	100
10	ट्रैक्टर	336	56	सिलाई मशीन	420	70
11	डीजल इंजन	378	63	तखत	558	93
12	विद्युत मोटर	258	43	ड्रेसिंग टेबल	210	35
13	–	–	–	सोफासेट	294	49
14	–	–	–	सोलरलालटेन	108	18
15	–	–	–	ट्रंक	468	78
16	–	–	–	वाशिंग मशीन	162	27
17	–	–	–	अलमारी	432	72
18	–	–	–	कूलर	462	77
19	–	–	–	रेफ्रीजरेटर	372	62

स्रोत : व्यक्तिगत साक्षात्कार से प्राप्त आंकड़ों के आधार पर

उपर्युक्त सारिणी के अवलोकन से स्पष्ट है कि परम्परागत कृषि उपकरण सभी चयनित किसानों के द्वारा प्रयोग में लाये जा रहे हैं। उन्नत किस्म के कृषि उपकरण कल्टीवेटर 61, थ्रेसर 22, रोटावेटर 30, ट्रैक्टर 56, डीजल इंजन 63 तथा

विद्युत मोटर 43 प्रतिशत किसानों द्वारा प्रयोग में लाये जा रहे हैं। इसके अलावा सभी घरेलू उपकरण सभी किसानो के पास हैं। विलासितापूर्ण घरेलू उपकरण – ड्रेसिंग टेबल 35, सोफासेट 49, रेफ्रीजरेटर 62, कूलर 77, वाशिंग मशीन 27, अलमारी 72 प्रतिशत कृषकों द्वारा प्रयोग में लाये जा रहे हैं। इससे स्पष्ट है कि किसानों का कृषि सम्बन्धी स्तर उत्तम है तथा घरेलू उपकरण के प्रयोग के आधार पर भी किसानों का सामाजिक स्तर अच्छा है।

निष्कर्ष :– प्रस्तुत शोध अध्ययन जनपद अमरोहा में गन्ने की कृषि से सम्बन्धित है। गायना नामक आदिवासियों के नाम पर इस पौधे का नाम गन्ना पड़ा। यह व्यापारिक फसल है जो भारत सहित विश्व के लगभग 80 से अधिक देशों में की जाती है। अध्ययन क्षेत्र के प्रत्येक विकासखण्ड से 100 – 100 गन्ना किसानों का चयन करके विभिन्न आयामों पर अध्ययन को पूर्ण किया गया है। चयनित कृषकों की साक्षरता का प्रतिशत 65.5 है। इस दृष्टि से गन्ना किसानों का स्तर अच्छा है। 84 प्रतिशत कृषक युवा तथा प्रौढ़ वर्ग के तथा 86 प्रतिशत सामान्य एवं अंति पिछड़ा वर्ग के हैं। क्षेत्र में कृषि का भविष्य उज्जवल है। क्षेत्र में एकल परिवारों में वृद्धि हुई है तथा छोटे परिवारों की संख्या कम है। इसलिए सरकार को परिवार नियोजन कार्यक्रमों को दृढ़ता से लागू करने की आवश्यकता है। क्षेत्र में मध्यम व बड़ किसानों की अधिकता है। 92 प्रतिशत कृषक उच्च व मध्यम आय वर्ग के हैं तथा 81 प्रतिशत के पास पक्के मकान हैं। परिवहन, मीडिया, कृषि तथा घरेलू उपकरणों के प्रयोग के आधार पर कृषकों की सामाजिक स्थिति तथा रहन सहन का स्तर उच्च है।

संदर्भ गन्थ सूची

1. सिंह, डॉ उदय भानु, कृषि भूगोल, केदारनाथ रामनाथ , मेरठ 1999–2000 पृष्ठ 1 व 2
2. एचटीटीपी:/ /डब्ल्यूडब्ल्यू.देशबन्धु.को.इन
3. खेती पत्रिका, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद नई दिल्ली, प्रस्तुति : अश्विनी कुमार निगम
4. बंसल, एस.सी., भारत का भूगाल, मीनाक्षी प्रकाशन, मेरठ, पृष्ठ 328
5. डॉ0 मेवाराम, धीमान, डॉ0 आर.पी.एस., विश्व का भूगोल, भारत भारती प्रकाशन एण्ड कं0, मेरठ, पृष्ठ 374
6. समाजार्थिक समीक्षा जनपद ज्योतिबा फुले नगर, 2008

International Research Journal
IJNRD
Research Through Innovation